विद्यार्थियों में तार्किक विकास जरूरीः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, शिक्षक दिवस पर आचार्यश्री ने कहा ज्ञान और संस्कार का विकास हो, अहिंसा प्रशिक्षण कार्यशाला में पहुंचे सौ गांवों के विद्यार्थी, नशामुक्ति का संकल्प दिलाया, दीक्षा समारोह कल, आज निकाला जाएगा वरघोडा, शाम को होगा मंगलभावना समारोह

केलवाः 5 सितम्बर

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिष्ठाता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि आज के प्रतिस्पर्द्धा के युग में यह आवश्यक हो गया है कि विद्यार्थियों में तार्किकता का विकास हो। इससे उसकी बुद्धि में आशातीत विकास होगा और वह समय के साथ कदम से कदम मिलकर आगे की ओर बढ सकेगा। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मनाए जा रहे शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षक समुदाय से आह्वान किया कि वे इस बात का संकल्प लें कि देश के सर्वागीण विकास में अपनी सहभागिता का निर्वाह करते हुए ज्ञान के साथ विद्यार्थियों को संस्कारों से परिपूर्ण शिक्षा भी देने का प्रयास करेंगे, तभी इस दिवस की सार्थकता सिद्ध हो सकेगी।

आचार्यश्री ने उक्त उद्‌गार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास में सोमवार को झुंझुनूं जिले के सौ गांवों से आए विद्यार्थियों और अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान से जुडे शिक्षकों को सबोधित करते हुए व्यक्त किए। विद्यार्थियों को सदैव नशामुक्त रहने का संकल्प दिलाते हुए आचार्यश्री ने कहा कि आज का दिन इस बात की ओर इंगित करता है कि शिक्षक और विद्यार्थी संयुक्त रुप से ज्ञान की साधना करने का प्रयास करें, ताकि देश और समाज का कल्याण हो सके। विद्यार्थियों के भविष्य का बेहतर निर्माण हो। इसकी जिम्मेदारी शिक्षक समुदाय की है।

उन्होंने संबोधि के चौथे अध्याय में उल्लेखित तर्क और बुद्धि को परिभाषित करते हुए कहा कि जहां तर्क हो वहां इसकी विवेचना करनी चाहिए और जहां तर्कातीत की स्थिति बनती हैं वहां श्रद्धा होती है। इस समय तर्क की बात करना गलत है। अहेतुगम्य और हेतुगम्य की स्थिति आत्मानुभूति का अहसास कराती है। यह तर्क का

विषय है। कहां तर्क करना है और कहां इससे मुक्त होना है। यह एक विवेचन का विषय है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को हमेशा कर्म में विश्वास करना चाहिए। उसका फल क्या मिलेगा। इसमें व्यर्थ में समय गंवाने की आवश्यकता नहीं है। काम ठीक होगा तो उसका मूल्यांकन भी होगा। प्रायः कार्य इस तरह का करने की आदत डालें कि वह बोले। इसमें निराश होना कर्म में व्यवधान डालता है। कार्य में आत्मा होती है। उसकी आवाज को दूर–दराज में बैठे लोगों तक पहुंचनी चाहिए। व्यक्ति गृहस्थ जीवन जीता है। इसमें इतना समय मिल जाता है कि वह शक्ति के साथ किसी भी काम को पूरा करने में जुटे। आज आदमी क्या नहीं कर सकता। यदि मन में धुन हो तो असंभव काम भी संभव हो सकता है।

कषाय मंद की साधना करें

आचार्यश्री ने श्रावक समाज से आह्वान किया कि वे कषायमंद की साधना करने का प्रयास करें। इंन्द्रियों पर भी नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। आत्मा से साक्षात्कार तभी हो सकता है जब हमारा जीवन तप, आराधना और साधना के प्रति समर्पित हो। 12 व्रतों की आराधना करते हुए श्रावक समाज आगे बढ सकता है। अहिंसा हमें जीवन दर्शन का ज्ञान कराती है। शाखाएं तो अनेक मिल जाएगी, लेकिन सभी का मूल कार्य एक है। अणुव्रत का कार्य स्कूलों में अच्छा चल रहा है। यह बडी प्रसन्नता की बात है, लेकिन इसमें ओर तेजी लाने की आवश्यकता है। लक्ष्य का निर्धारण कर आगे बढे। अंतिम लक्ष्य की तरफ गति होती है तो मंजिल अपने आप मिल जाती है।

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि अणुव्रत गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी की देन है। समय के साथ इसने व्यापक स्थान बना लिया है। प्रेक्षाध्यान और अणुव्रत से जुडे व्यक्ति देश में कहीं भी जाए उन्हें कोई रोकता नहीं है। उन्होंने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने तेरापंथ को व्यापक रुप प्रदान किया है। संतों के आशीर्वाद के बिना आगे का काम नहीं हो सकता। अब कार्यकर्ताओं से यह अपेक्षा है कि वह अणुव्रत की अलख देशभर में जगाएं। अहिंसा और जीवन विज्ञान स्वयं का काम है। इसके सर्वव्यापीकरण के लिए श्रावक समाज में लगन की आवश्यकता है। मेवाड के कुछ गांवों में इस विषय पर काम करने की जरुरत है। इससे संघ, समाज और देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा। बिना किसी शोरगुल यह व्यापक बने और लोगों में जागृति आए। यह एक लक्ष्य होना चाहिए। जो व्यक्ति अभी इस कार्य में जुटे हुए हैं वे साधुवाद के पात्र है। मुनि किशनलाल ने कहा कि वर्तमान में देश के

तीन सौ स्कूलों में लाखों विद्यार्थी ध्यान, साधना, तप, प्रेक्षाध्यान आदि का प्रशिक्षण ले रहे है। इनकी संख्या में वृद्धि के प्रयास में कार्यकर्ता पूरी तरह से जुटे हुए है। मुनि सुखलाल ने अहिंसा पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि छह हजार संस्थाए विश्वभर में अहिंसा के विचारों को आमजन तक पहुंचाने का काम कर रही है। कार्यकर्ताओं के पास आधुनिक साधनों का अभाव है। फिर भी वे अलख जगाने में लगे हुए है। उत्तरप्रदेश, झारखंड और बिहार सरीखे राज्यों में भी यह काम तेजी से चल रहा है। इस अवसर पर अणुव्रत शिक्षक संसद संस्थान के सहसंयोजक धर्मचंद जैन "अनजाना" और रतनगढ के रुपचंद सेठिया ने भी विचार प्रकट किए। अहिंसा पर्यवेक्षक रमेश जीनगर ने विद्यार्थियों को संकल्प का प्रयोग करवाया। छात्रों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। मंत्री सोहनलाल धाकड ने आभार की रस्म अदा की। संयोजन शिक्षक संसद संस्थान के अध्यक्ष भीखमचंद नखत ने किया।

नशामुक्ति के लिए शिक्षकों का दृढ संकल्प

शिक्षक समुदाय का एक प्रतिष्ठित समुदाय है। उसके पास विशिष्ठ बौद्धिक क्षमता होती है। अपनी बौद्धिक क्षमता का समुचित उपयोग करना उसका दायित्व है। सरकार शिक्षक की समुचित सुरक्षा करे यह आवश्यक है। पर यदि शिक्षक उसके बावजूद भी अपनी क्षमता का सदुपयोग नहीं करता है तो अपने दायित्व के प्रति बेपरवाह हो जाता है। अणुव्रत शिक्षक संसद अपने दायित्व के प्रति जागरुक शिक्षकों का राष्ट्रव्यापी संगठन है। राजसमंद जिले के शिक्षक भी उसके साथ जुडे हुए है। वे इस आंदोलन को पूरे जिले में फैलाएं। यह जरुरी है। उक्त विचार मंत्री मुनि सुमेरमल ने राजसमंद जिले के अणुव्रत शिक्षक संसद के शिक्षकों की संगोष्ठी के समापन समारोह में प्रकट किए। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा कि आज सारी दुनियां में अपराध बढ रहे है। उसके अनेक कारण है। पर गहराई से देखा जाए तो नशा प्रमुख कारण है। यह भयंकर रुप से बढ रहा है। इस पर रोक लगाई जानी आवश्यक है। इसके लिए विद्यालय सक्षम स्थल है। यदि प्रारंभ से ही उनमें सुसंस्कार भरे जा सके तो बहुत काम हो सकता है। अणुव्रत शिक्षक संसद इसी दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। राजसमंद जिले के स्कूलों में भी नशामुक्ति का यह अभियान सशक्त रुप से चलना चाहिए। इस अवसर पर संसद के अध्यक्ष भीखमचंद नखत, धर्मचंद अंजाना, रचना तैलंग, चतर कोठारी आदि ने भी अपने विचार प्रकट किए। सभी

शिक्षकों ने अत्यंत उत्साह के साथ इस अभियान में अपना योगदान प्रदान करने का दृढ संकल्प किया।

प्रतियोगिता में छाया उत्साह

तेरापंथ युवक परिषद् की ओर से रविवार रात को आयोजित पैसा ही परमेश्वर है विषयक वाद–विवाद प्रतियोगिता को लेकर प्रतियोगियों में उत्साह बना रहा। परिषद के मंत्री लक्की कोठारी ने बताया कि मुनि दिनेशकुमार के सान्निध्य में आयोजित इस प्रतियोगिता के पक्ष में प्रथम जीवन मादरेचा, द्वितीय श्रेया हिंगड, तृतीय श्रीमती राजतिलक, विपक्ष में प्रथम आयुषी हिंगड, द्वितीय पूजा दक और तृतीय श्रीमती लता मादरेचा रही। प्रतियोगिता के दौरान आचार्यश्री महाश्रमण भी मौजूद थे। कार्यक्रम में परिषद के सदस्य सहित सभी पदाधिकारी उपस्थित थे।

केलवा में दीक्षा महोत्सव कल

दो मुमुक्षुओं को दी जाएगी आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में दीक्षा

तेरापंथ के 11वें अधिष्ठाता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में बुधवार को तेरापंथ की उदगम स्थली के रुप में विख्यात केलवा में दीक्षा महोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इसके साथ ही इस भूमि पर एक स्वर्णिम अध्याय ओर जुड जाएगा। दीक्षा समारोह को लेकर श्रावक समाज में उत्साह का माहौल है। इस दौरान गुजरात राज्य के सूरत निवासी और उदयपुर जिले के सायरा गांव में जन्मी मुमुक्षु चेतना और पंजाब के जगराओं निवासी मुमुक्षु अश्विनी कुमार को दीक्षा दी जाएगी। कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति को लेकर की जा रही तैयारियां अब अंतिम चरण में है। मंगलवार दोपहर में दोनों मुमुक्षुओं का वरधोडा निकाला जाएगा।

चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी ने बताया कि सूरत निवासी मुमुक्षु सुश्री चेतना की शोभायात्रा तेरापंथ समाज केलवा के तत्वावधान में मंगलवार को दोपहर दो बजे निकाली जाएगी। मंगल भावना समारोह शाम साढे सात बजे शांतिदूत आचार्यश्री के सान्निध्य में आयोजित होगा। कोठारी ने बताया कि मुमुक्षु चेतना का जन्म 12 मई 1991 को उदयपुर जिले के सायरा कस्बे में हुआ था। बीए द्वितीय वर्ष तक अध्ययन कर चुकी इस मुमुक्षु के मन में वैराग्य का भाव 10 वर्ष की उम्र में उत्पन्न हुआ था। इन्हें वैराग्य की प्रेरणा मुनिश्री देवराज स्वामी और उनके दादा–दादी, मम्मी–पापा से मिली। चांदमल–राजश्रीबेन कावडिया की सुपुत्री चेतना ने आचारबोध, व्यवहारबोध, संस्कारबोध, भक्तामर, श्रावक प्रतिक्रमण, श्रावक बोल, तत्व चर्चा, कालू तत्वशतक, आलम्बनसूत्र, संघीयगीत, इक्कीस द्वार,जैन तत्व प्रवेश, कर्तव्य षट्त्रिंशिता, साधु

प्रतिक्रमण, तेरापंथ प्रबोध और 50 श्लोक का ज्ञान अर्जित है। उन्हे प्रतिक्रमण आदेश चूरू जिले के राजलदेसर कस्बे में 8 फरवरी 2011 को और दीक्षा आदेश 9 जुलाई को राजसमंद जिले के रीछेड गांव में दिया गया था।

कोठारी ने बताया कि मुमुक्षु अश्विनी का जन्म एक सितम्बर 1983 को पंजाब जिले के जगराओं गांव में हुआ था। प्रेमचंद और संतोष जैन के परिवार में जन्में इस मुमुक्षु ने स्नातक तक शिक्षा और छट्ठी तक तत्वज्ञान द्वितीय वर्ष का ज्ञान अर्जित किया है। इन्होंने भक्तामर स्त्रोत, कल्याण मंदिर, आलम्बन सूत्र, रत्नाकर–पंचविंशिका, कर्तव्य–षद् त्रिंशिका, चतुर्विंशति–गुण,गेय गीति, पच्चीस बोल, पच्चीस बोल पर चर्चा, कालू तत्व शतक, इक्कीस द्वार, पच्चीस बोल पर चतुर्भंगी, आचार बोध, व्यवहार बोध, संस्कार बोध, तेरापंथ प्रबोध, अष्टकम् चार, विघ्नहरण ढाल, मुणिन्द मोरा ढाल, सिन्दूर प्रकार और श्रमण प्रतिक्रमण का ज्ञान अर्जित किया है। कोठारी ने बताया कि इन्होंने 11 मार्च 2011 को संस्था में प्रवेश किया था। 20 जून को चारभुजा में प्रतिक्रमण और 27 जुलाई को केलवा में दीक्षा का आदेश हुआ था।

छह दल की नियुक्ति

आचार्यश्री महाश्रमण के चातुर्मास के अर्न्तगत अणुव्रत समिति की ओर से केलवा में एक सघन नशामुक्ति अभियान चलाया जा रहा है। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल एवं मुनि अशोक कुमार, मुनि जयंतकुमार के निर्देशन में अणुव्रत कार्यकर्ताओं के छह दल नियुक्त किए गए है। इसमें मुकेश कोठारी, प्रवीण कोठारी, रजनीश बोहरा, गौतम कोठारी, श्रीमती रेखा कोठारी, श्रीमती नीलू कोठारी को प्रमुख बनाया गया है। गांव के प्रत्येक मौहल्ले में अणुव्रत कार्यकर्ता प्रमुख व्यक्तियों को साथ लेकर घर–घर नशामुक्ति की दस्तक दे रहे है। काफी लोगों ने इनकी प्रेरणा से व्यसन त्याग दिया है। आचार्यश्री के निर्देशानुसार यह निर्णय किया गया है कि केलवा के लोगों को नशामुक्त करने के लिए एक सुनियोजित कार्यक्रम चलाया जाएगा। इसके अन्तर्गत केलवा से शराब ठेका बंद करवाया जाएगा।